International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 5, July-August 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

नीतिपरक मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी के बाल साहित्य का अध्ययन

डॉ. अंजनी वशिष्ठ

प्राचार्य (बी.एड. कॉलेज), बैंक कॉलोनी, शमशाबाद रोड, आगरा, उत्तर प्रदेश

सार

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (१ दिसम्बर १९१६ - २९ अगस्त १९९८) हिन्दी के साहित्यकार थे। उन्होंने बाल साहित्य पर 26 पुस्तकें लिखीं जिससे वे 'बच्चों के गांधी' भी कहलाते हैं। उनकी कविताएं आज भी बच्चों के स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल हैं। हर रचना से बाल मन आज भी प्रेरित होता है। उनकी अधिकांश रचनाएं देश प्रेम, वीरता, प्रकृति आदि पर आधारित हैं। बच्चों के कवि सम्मेलन का प्रारम्भ और प्रवर्तन करने वालों के रूप में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का योगदान अविस्मरणीय है। वह उत्तर प्रदेश के शिक्षा सचिव थे। उनकी अध्यक्षता में 500 बाल कविताओं की रचना हुई थी। हिंदी की इन कविताओं को स्कूलों में पढ़वाना व अंग्रेजी की कविताओं की जगह स्थापित करना इसका उद्देश्य था।

प्रयागराज में ही माहेश्वरी जी ने 'गुंजन' नामक संस्था भी बनाई, जिसकी गोष्ठियाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कक्ष में समय-समय पर होती रहती थीं। माहेश्वरी जी भी काव्यमंचों पर कवितापाठ भी करते थे तथा उन्होंने श्रोताओं से भूरि भूरि सराहना पाई।

उनका जन्म आगरा के रोहता में हुआ था।आपकी शिक्षा आगरा में हुई। उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग में रहकर विभिन्न नगरों में सेवाएँ दी। १९७८ में सेवानिवृत होकर अपने पैतृक गाँव वापस आ गए। १९८१ में आलोक नगर में आकर बस गए। वैसे तो आपका लेखन विद्यार्थी-जीवन से ही शुरू हो गया थ किन्तु सेवानिवृत्ति के बाद आपने और अधिक साहित्य सृजन किया। अपनी आत्मकथा 'सीधी राह चलता रहा' उन्होने अपनी मृत्यु के दो घण्टे पहले पूरा किया था।

How to cite this paper: Dr. Anjani Vashisht "Dwarka from the Perspective of Ethical Beliefs Study of Children's Literature of Prasad Maheshwari" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-5, August 2022, pp.1736-1740, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd51740.pdf

IJTSRD51740

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

वह उत्तर प्रदेश के शिक्षा सचिव थे। उन्होंने शिक्षा के व्यापक प्रसार और स्तर के उन्नयन के लिए अनथक प्रयास किए। उन्होंने कई कवियों के जीवन पर वृत्त चित्र बनाकर उन्हे याद करते रहने के उपक्रम दिए। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जैसे महाकवि पर उन्होंने बड़े जतन से वृत्तचित्र बनाया। यह एक कठिन कार्य था, लेकिन उसे उन्होंने पूरा किया। बड़ों के प्रति आदर-सम्मान का भाव माहेश्वरी जी जितना रखते थे उतना ही प्रेम उदीयमान साहित्यकारों को भी देते थे। उन्होंने आगरा को अपना काव्यक्षेत्र बनाया। केंद्रीय हिंदी संस्थान को वह एक तीर्थस्थल मानते थे। इसमें प्रायः भारतीय और विदेशी हिंदी छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य का ज्ञान दिलाने में माहेश्वरी जी का अवदान हमेशा याद किया जाएगा। वह गृहस्थ संत थे।

शिक्षा और कविता को समर्पित द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जीवन बहुत ही चित्ताकर्षक और रोचक है। सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार कृष्ण विनायक फड़के ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में प्रकट किया कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी शवयात्रा में माहेश्वरी जी का बालगीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' गाया जाए।फड़के जी का मानना था कि अंतिम समय भी पारस्परिक एकता का संदेश दिया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश सूचना विभाग ने अपनी होर्डिगों में प्राय: सभी जिलों में यह गीत प्रचारित किया और उर्दू में भी एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक था, 'हम सब फूल एक गुलशन के', लेकिन वह दृश्य सर्वथा अभिनव और अपूर्व था जिसमें एक शवयात्रा ऐसी निकली जिसमें बच्चे मधुर धुन से गाते हुए चल रहे थे, 'हम सब सुमन एक उपवन के'। किसी गीत को इतना बड़ा सम्मान, माहेश्वरी जी की बालभावना के प्रति आदर भाव ही था। उनका ऐसा ही एक और कालजयी गीत है- वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो। उन्होंने बाल साहित्य पर 26 पुस्तकें लिखीं। इसके अतिरिक्त पांच पुस्तकें नवसाक्षरों के लिए लिखीं। उन्होंने अनेक काव्य संग्रह और खंड काव्यों की भी रचना की।

परिचय

माहेश्वरी जी की कोई 40 से अधिक बाल पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें बालगीत, बाल कथागीत, गीत, कविता व संस्मरण आदि की पुस्तकें हैं। साक्षरता से जुड़ी भी उनकी कई पुस्तकें हैं जिन्होंने साक्षरता के प्रसार में अहम भूमिका निभाई है। 'बाल गीतायन' उनके बालगीतों का एक बेहतर चयन कहा जा सकता है, जो 80 के दशक में बेहतरीन आकल्पन के साथ प्रकाशित हुआ था।

बालगीत के क्षेत्र में उन्होंने प्रभूत कार्य किया है।

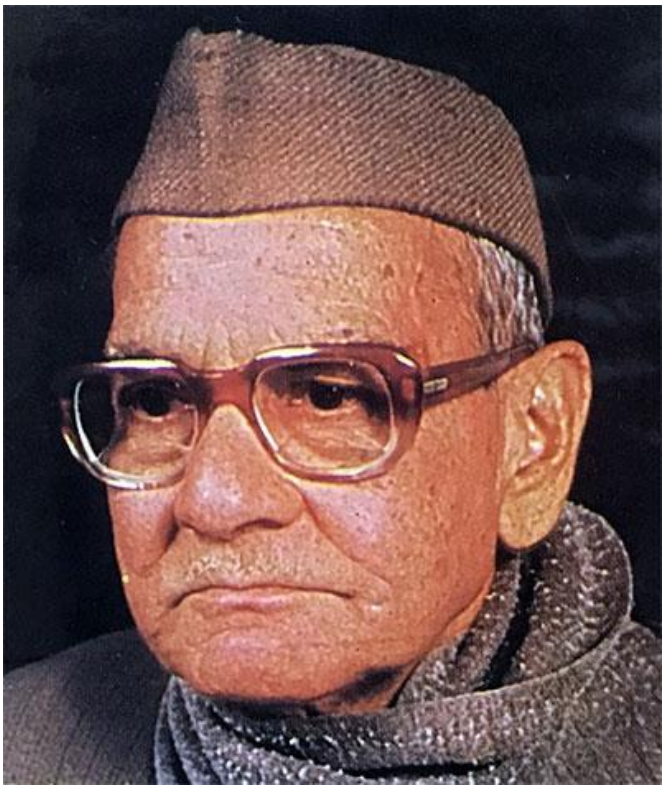

स्वतंत्रता के बाद उनका पहला बालगीत संग्रह 'कातो और गाओ' 1949 में प्रकाशित हुआ। कातो और गाओ के बाद प्रकाशित उनके बालगीतों की एक लंबी श्रृंखला है- लहरें, बढ़े चलो, बुद्धि बड़ी या बल, अपने काम से काम, माखन मिश्री, हाथी घोड़ा पालकी , सोने की कुल्हाड़ी, अंजन खंजन, सोच समझ कर दोस्ती करो, सूरज-सा चमकूँ मैं, हम सब सुमन एक उपवन के, सतरंगा फुल, प्यारे गुब्बारे, हाथी आता झूम के, बाल गीतायन, आई रेल आई रेल, सीढ़ी सीढ़ी चढ़ते हैं, हम हैं सूरज चाँद सितारे, जल्दी सोना जल्दी जगना, मेरा वंदन है, बगुला कुशल मछुआ, नीम और गिलहरी, चाँदी की डोरी, ना-मौसी-ना, चरखे और चूहे, धूप और धनुष। इसके अतिरिक्त श्रम के सुमन, बाल रामायण तथा शेर भी डर गया कथा-कहानी की पुस्तकें हैं।[1]

'यदि होता किन्नर नरेश मैं राजमहल में रहता, सोने का सिंहासन होता सिर पर मुकुट चमकता' 'सूरज निकला चिड़िया बोलीं, कलियों ने भी आंखें खोलीं' या 'वीर तुम बढ़े चलो, धीरे तुम बढ़े चलो, सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो...' जैसे कितने ही गीत हैं जिन्हें कम से कम तीन पीढ़ियों ने बचपन में पढा और गुनगुनाया है। एक समय था जब बच्चों के लिए अच्छे प्रार्थनागीत तक नहीं मिलते थे। भारत की आजादी की लड़ाई के लिए प्रयाण गीत नहीं मिलते थे। खादी पर, चरखे पर, झंडे पर, सत्याग्रह पर, राष्ट्रीय भावना पर गीतों की कमी थी। माहेश्वरी जी ने, श्यामलाल गुप्त पार्षद, सोहनलाल द्विवेदी, निरंकार देव सेवक, हरिकृष्ण देवसरे व डॉ श्रीप्रसाद आदि के साथ मिल कर ऐसे गीतों की कमी पूरी की। बेसिक शिक्षा परिषद व शिक्षा विभाग से जुड़े होने के नाते द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी ने यह बीड़ा उठाया कि 4 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए ऐसे गीत लिखे जाएं जो उनमें संस्कार पैदा करें साथ ही वे छन्द व कथ्य की दृष्टि से उत्तम हों। उन्होंने अपने समय के श्रेष्ठ कवियों की रचनाएं पाठ्यक्रम में रखवाईं ताकि बच्चों का मानसिक स्तर उन्नत हो। यद्यपि उन्होंने प्रौढ़ों के लिए भी कई काव्य-कृतियां लिखीं किन्तु उनका बाल साहित्यिकार ही प्रमुखता से जाना पहचाना गया।

६ काव्यसंग्रह, २ खंड काव्य, २६ बाल साहित्य की पुस्तकें, ३ कथा संग्रह, ५ पुस्तकें नवसाक्षरों के लिए, ३ शिक्षा पुस्तकें और ग्रंथावली ३ भागों में, हम सब सुमन एक उपवन के, वीर तुम बढ़े चलो, चन्दा मामा आ, इतने ऊंचे उठो।

उनकी एक कविता मैं सुमन हूँ यहाँ प्रस्तुत है -

व्योम के नीचे खुला आवास मेरा;
ग्रीष्म, वर्षा, शीत का अभ्यास मेरा;
झेलता हूं मार मारूत की निरंतर,
खेलता यों जिंदगी का खेल हंसकर।
शूल का दिन रात मेरा साथ
किंतु प्रसन्न मन हूं।
मैं सुमन हूं।।
तोड़ने को जिस किसी का हाथ बढ़ता,
मैं विहंस उसके गले का हार बनता;
राह पर बिछना कि चढ़ना देवता पर,
बात हैं मेरे लिए दोनों बराबर।
मैं लुटाने को हृदय में
भरे स्नेहिल सुरभि-कन हूं।
मैं सुमन हूं।।
रूप का श्रृंगार यदि मैंने किया है,
साथ शव का भी हमेशा ही दिया है;
खिल उठा हूं यदि सुनहरे प्रात में मैं,
मुस्कराया हूं अंधेरी रात में मैं।
मानता सौन्दर्य को-
जीवन-कला का संतुलन हूं।
मैं सुमन हूं॥

उठो धरा के अमर सपूतो

उठो धरा के अमर सपूतो पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से नई स्फूर्ति, नव प्राण भरो।
नया प्रात है, नई बात है, नई किरण है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगे, नई आस है, साँस नई।
युग-युग के मुरझे सुमनों में, नई-नई मुसकान भरो।
डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ नए स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन-गुन-गुन करते भौंरे मस्त हुए मँडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा में नया राग, नवगान भरो।
कली-कली खिल रही इधर वह फूल-फूल मुस्काया है।
धरती माँ की आज हो रही नई सुनहरी काया है।

नूतन मंगलमय ध्वनियों से गुंजित जग-उद्यान करो।

सरस्वती का पावन मंदिर यह संपत्ति तुम्हारी है।

तुम में से हर बालक इसका रक्षक और पुजारी है।

शत-शत दीपक जला ज्ञान के नवयुग का आह्वान करो।

उठो धरा के अमर सपूतो, पुनः नया निर्माण करो।

विचार-विमर्श

साहित्यिक अवदान के लिए माहेश्वरी जी को अनेक पुरस्कार मिले। वर्ष 1977 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा उन्हें बाल साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार तथा ताम्रपत्र उन्होंने तत्कालीन प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई से ग्रहण किया। 1992 में उन्हें पुनः उ.प्र. हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा बाल साहित्य के क्षेत्र में सर्वोच्च पुरस्कार बाल साहित्य भारती से सम्मानित किया गया[2]

उनके अनेक गीतों के मुखड़े जन जागरण और सांप्रदायिक सद्भाव के विज्ञापन के रूप में प्रसारित किए गए और सराहे गए हैं। उनके बालगीत की पहली पंक्ति 'हम सब सुमन एक उपवन के एक समय उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कौमी एकता का बोध जगाने वाली विज्ञापन पंक्ति के रूप में इस्तेमाल किया गया।

किस लिए निरन्तर जलते
रहते हो मेरे दीपक?
क्यों यह कठोर व्रत तुमने
पाला है प्यारे दीपक?॥1॥

क्या इस जलते रहने में
है स्वार्थ तुम्हारा कोई?
तुम ही जगमग जलते क्यों
जब अखिल सृष्टि है सोई?॥2॥

क्या जगती के सोने पर
अपनी धूनी रमते हो?
इस शांत स्तब्ध रजनी में
योगी बन तप करते हो?॥3॥

काली-काली कज्जलसी
जो वस्तु निकलती ऊपर?
क्या तप के बल से उर की
कालिमा भग रही डर कर?॥4॥

मृदु स्नेह भरे उर से तो
तुम ही जग को अपनाते।
अपना प्रिय गात जला कर
तुम ही प्रकाश दिखलाते॥5॥

पर यह कृतघ्न जग तुमको
कैसा बदला देता है।
क्षण में धीमे झांके से
अस्तित्व मिटा देता है॥6॥

तुम हो मिट्टी के पुतले
मानव भी मिट्टी का रे।
पर दोनों के जीवन में
कितना महान् अन्तर रे॥7॥

पर-हित के लिये सदा तुम
तिल-तिल जल-जल मरते हो।
जग को ज्योतित करने में
कब कोर-कसर रखते हो?॥8॥

पर मानव, रे, उसकी वह
प्रज्वलित स्वार्थ की ज्वाला।
जग को नित जला-जला कर
करती उसका मुँह माला॥9॥

प्रातः रवि के आने पर
तुम मन्द-मन्द जलते हो।
अपने से जो तेजस्वी
उसका आदर करते हो?॥10॥

पर मानव, वह अपने से
तेजस्वी का रे वैभव
क्या-कभी देख सकता है
होकर प्रशान्त औ नीरव?॥11॥

दीपक! जलते-जलते क्यों
तुम स्वयं कभी बुझ जाते?
क्या स्नेह-शून्य उर लेकर
जग को मुँह नहीं दिखाते?॥12॥

कितने सुन्दर हैं उर के
ये भाव अपूर्व निराले।
आकृष्ट शलभ इनसे ही
होकर फिरते मतवाले॥13॥

लौ का भी तो उज्ज्वल रुख
है कभी न नीचे झुकता।
जग-हित जलने वालों का
मस्तक ऊँचा ही रहता॥14॥

इस भाँति निरन्तर जलते
रहना ही अमर कहानी।
जलने में ही जीवन की
रह जाती अमिट निशानी॥15॥

परिणाम

अच्छे और कालजयी साहित्य की रचना एक कठिन कार्य है, पर इससे भी कठिन है, बाल साहित्य का सृजन। इसके लिए स्वयं बच्चों जैसा मन और मस्तिष्क बनाना होता है। श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ऐसे ही एक साहित्यकार थे, जिनके लिखे गीत एक

समय हर बच्चे की जिह्वा पर रहते थे। उन्हें पढ़ने और पढ़ाने का बड़ा चाव था। पढ़ने के लिए वे इंग्लैण्ड भी गये, लेकिन आजीविका के लिए उन्होंने भारत में शिक्षा क्षेत्र को चुना। अनेक महत्वपूर्ण पदों पर काम करते हुए वे शिक्षा निदेशक और निदेशक साक्षरता निकेतन जैसे पदों पर पहुँचे। उनके कई कालजयी गीत आज भी हिन्दी के पाठ्यक्रम में हैं और बच्चे उन्हें बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। उनके एक लोकप्रिय गीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' से बाल समीक्षक कृष्ण विनायक फड़के बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी वसीयत में ही लिख दिया कि उनकी शवयात्रा में 'राम नाम सत्य है' के बदले बच्चे मिलकर यह गीत गायें, तो उनकी आत्मा को बहुत शान्ति मिलेगी।[3]

उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग ने अपने प्रचार पटों में इस गीत को लिखवाया और उर्दू में भी 'हम सब फूल एक गुलशन के' पुस्तक प्रकाशित की। श्री माहेश्वरी ने बच्चों के लिए 30 से भी अधिक पुस्तकें लिखीं। साक्षरता विभाग में काम करते समय उन्होंने नवसाक्षरों के लिए भी पांच पुस्तकें लिखीं। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने कई काव्य संग्रह और खण्ड काव्यों की रचना की। उन दिनों बड़े लोगों के लिए देश के हर भाग में कवि सम्मेलन होते थे। यह देखकर माहेश्वरी जी ने बाल कवि सम्मेलन प्रारम्भ कराये। उत्तर प्रदेश में शिक्षा सचिव रहते हुए उन्होंने कई कवियों के जीवन पर वृत्त चित्र बनवाए। इनमें सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पर बनवाया हुआ वृत्त चित्र अविस्मरणीय है।

उन्हें साहित्य सृजन के लिए देश के सभी भागों से अनेक मान-सम्मान मिले, पर जब उनके गीतों को बच्चे सामूहिक रूप से या नाट्य रूपान्तर कर गाते थे, तो वे उसे अपना सबसे बड़ा सम्मान मानते थे। माहेश्वरी जी जहां वरिष्ठ कवियों का सम्मान करते थे, वहीं नये साहित्यकारों को भी भरपूर स्नेह देते थे। आगरा के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान को वे एक तीर्थ मानते थे। इसमें जो विदेशी या भारत के अहिन्दीभाषी प्रान्तों के छात्र आते थे, उनके साथ माहेश्वरी जी स्वयं बड़ी रुचि से काम करते थे। हम सब सुमन एक उपवन के, वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो, जिसने सूरज चांद बनाया, इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है...जैसे अमर गीतों के लेखक द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का 29 अगस्त, 1998 को देहावसान हुआ। उनकी आत्मकथा 'सीधी राह चलता रहा' उनके जीवन का दर्पण है।[4]

हे दीनबन्धु, करुणा-निधान!
जगती-तल के चिर-सत्य-प्राण!
होरही व्याप्त है कण-कण में
तेरी ज्योतिर्लीला महान्॥1॥

सर-सरिता-निर्झरिणी का जल
बहता रहता प्रतिपल अविरल
कल-कल करता, गाता फिरता,
तेरे ही यश का मधुर गान॥2॥

ये मृदुल और मंजुल कलियाँ
तरु-तरु की ये सुमनावलियाँ,
विस्फुट करतीं, विकसित करतीं
सौन्दर्य अमित तेरा महान्॥3॥

झिलमिल-झिलमिल तारे अगणित,
नीलाम्बर को करते शोभित,
वह भव्य रूप उनका स्वरूप,
तेरे प्रकाश से दीप्तिमान॥4॥

प्रभु तेरा वह प्रकाश निर्मल,
जग को ज्योतित करता प्रतिपल,
मेरा हृद-तल भी हो उज्ज्वल,
पाकर उसका नव-दिवय दान॥5॥

निष्कर्ष

नभ के नीले आँगन में
घनघोर घटा घिर आयी!
इस मर्त्य-लोक को देने
जीवन-सन्देशा लायी॥1॥

हैं परहित-निरत सदा ये
मेघों की माल सजीली।
इस नीरव, शुष्क जगत् को
करती हैं सरस, रसीली॥2॥

इससे निर्जीव जगत् जब
सुन्दर, नव जीवन पाता।
हरियाली मिस अपना वह
हर्षोल्लास दिखलाता॥3॥

इनका मृदु रोर श्रवण कर
कोकिल मधु-कण बरसाती।
तरु की डाली-डाली पर
कैसी शोभा सरसाती॥5॥

केकी निज नृत्य-दिखता,
करता फिरता रँगरेली।
पक्षी भी चहक-चहक कर
करते रहते अठखेली॥6॥

सर्वत्र अँधेरा छाया
कुछ देता है न दिखायी।
बस यहाँ-वहाँ जुगुनू की
देती कुछ चमक दिखायी॥7॥

पर ये जुगुनू भी कैसे
लगते सुन्दर चमकीले
जगमग करते रहते हैं
जग का ये मार्ग रँगीले॥8॥

सरिता-उर उमड़ पड़ा है
फिर से नव-जीवन पाकर
निज हर्ष प्रदर्शित करता
उपकूलों से टकरा कर॥9॥

मृदु मन्द समीरण सर्-सर्
लेकर फुहार बहता है।
धीरे-धीरे जगती का
अंचल शीतल करता है॥10॥

काव्य रचना से साहित्य के सागर की कल-कल और चुनिंदा मोतियों को उन्होंने पिरोया था।[5] बच्चों के शब्दों के सागर में सैर कराकर वो मन हर्षाते थे तो युवाओं व बुजुर्गों को भी नई विधा सिखाते थे। काव्य शिरोमणि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी बाल गीतायन को रचकर बच्चों के गांधी के नाम से मशहूर हो गए। उनकी हर रचना बाल मन के साथ बड़ी उम्र वर्ग के लोगों को भी प्रेरित करने वाली होती थीं।[6]

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जन्म ग्वालियर रोड स्थित रोहता में एक दिसंबर, 1916 को किसान परिवार में हुआ था। उच्च शिक्षा ग्रहण करते हुए उन्होंने अपने पिता की खेती में सहायता की। वो प्रतिदिन साइकिल से आगरा आते थे। इसके बाद उन्होंने इंग्लैंड में एक वर्ष तक अध्ययन किया। सहायक शिक्षक से उपशिक्षा निदेशक के पद तक का सफर उन्होंने किया। बाल गीतायन की रचना कर उन्होंने बच्चों को 176 कविताओं का तोहफा दिया था। उनकी कविताएं आज भी बच्चों के स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल हैं। हर रचना से बाल मन आज भी प्रेरित होता है। उनकी अधिकांश रचनाएं देश प्रेम, वीरता, प्रकृति आदि पर आधारित थीं।[9]

उनके पौत्र प्रांजल माहेश्वरी बताते हैं कि उनकी प्रतिमा आगरा में एमजी रोड पर सुभाष पार्क तिराहे पर लगी है। इसका अनावरण तत्कालीन राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री ने किया था। जयपुर हाउस से प्रताप नगर तक के मार्ग का नामकरण उनके नाम पर किया गया। गणतंत्र दिवस की परेड में सेना द्वारा उनके गीत वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो... पर मार्च पास्ट किया जाता है। प्रसिद्ध गायिका उषा उत्थुप द्वारा संसद भवन के केंद्रीय हॉल में स्व. माहेश्वरी के गीत इतने ऊंचे उठो कि जितना ऊंचा गगन है... का सस्वर गायन प्रधानमंत्री एवं अन्य मंत्रियों की उपस्थित में किया गया था।[7]

शिक्षा और कविता को समर्पित द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जीवन बहुत ही चित्ताकर्षक और रोचक है। उनकी कविता का प्रभाव सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार कृष्ण विनायक फड़के ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में प्रकट किया कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी शवयात्रा में माहेश्वरी जी का बालगीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' गाया जाए । फड़के जी का मानना था कि अंतिम समय भी पारस्परिक एकता का संदेश दिया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश सूचना विभाग ने अपनी होर्डिगों में प्राय: सभी जिलों में यह गीत प्रचारित किया और उर्दू में भी एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक था, 'हम सब फूल एक गुलशन के', लेकिन वह दृश्य सर्वथा अभिनव और अपूर्व था जिसमें एक शवयात्रा ऐसी निकली जिसमें बच्चे मधुर धुन से गाते हुए चल रहे थे, 'हम सब सुमन एक उपवन के'। किसी गीत को इतना बड़ा सम्मान, माहेश्वरी जी की बालभावना के प्रति आदर भाव ही था।[8]

बच्चों के कवि सम्मेलन का प्रारंभ और प्रवर्तन करने वालों के रूप में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का योगदान अविस्मरणीय है। वह उप्र के शिक्षा सचिव थे। उन्होंने शिक्षा के व्यापक प्रसार और स्तर के उन्नयन के लिए अनथक प्रयास किए।[10]

संदर्भ

[1] धीरेन्द्र यादव. "जब अंतिम यात्रा में 'राम नाम सत्य' की जगह, बच्चों ने गाया प्रसाद माहेश्वरी का ये गीत". पत्रिका न्यूज़. अभिगमन तिथि 2020-08-kigj22. तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[2] जब अंतिम यात्रा में 'राम नाम सत्य' की जगह, बच्चों ने गाया द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का ये गीत

[3] 'यदि होता किन्नर नरेश मैं' वाले कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की याद

[4] उठो धरा के अमर सपूतो ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी | Utho Dhara Ke Amar Sapooton-Dwarika Prasad Maheshwari

[5] Itne Unche Utho ~ Dwarika Prasad Maheshwari | इतने ऊँचे उठो ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

[6] MoolMantra ~ Dwarika Prasad Maheshwari | मूलमंत्र ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

[7] कौन सिखाता है चिडियों को ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

[8] हम सब सुमन एक उपवन के – द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

[9] Yadi Hota Kinnar Naresh Main ~ Dwarika Prasad Maheshwari | यदि होता किन्नर नरेश मैं ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

[10] Main Suman Hun ~ Dwarika Prasad Maheshwari | मैं सुमन हूँ – द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी